International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(I), October - December, 2021, pp.125-133

भारतीय शिक्षा पद्धतिः आदि से वर्तमान तक

अंचल सक्सेना*

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा पद्धति अर्थात वह शिक्षा पद्धति जिसका उपयोग तक्षशिला व नालंदा विश्वविद्यालय जैसे विश्वविद्यालय करते थे, वह विद्यालय जिसने भारत को वाराहमिहिर, भास्कराचार्य, बाणभट्ट, आर्यभट्ट तथा चाणक्य जैसे महानतम विद्वान प्रदान किए हैं। भारत की शिक्षा पद्धति की छाप व चमक इतनी थी कि प्राचीनकाल मे विदेशों से अगणित विद्या र्थी विद्यार्जन के लिए आते थे। यहाँ तक कि विदेशी तीर्थ यात्रियों मे से मेगास्थनीज, फाहयान, हवेनसांग, इत्सिंग तथा पेस आदि का भारत आने का एक कारण यहा से ज्ञान अर्जित करना भी था। अलबःनी वस्तुतः भारत के महान ग्रंथों का अध्ययन करके उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ था। परंतु महमूद गजनवी के आदेश के अनुसार तथा इन ग्रन्थों की भावना, संस्कृत भाषा समझ न पाने के कारण वह उनके छिद्रान्वेषण की ओर उन्मुख हो गया परंतु फिर भी वह इन ग्रंथो व भारत की शिक्षा की प्रशंषा करने से स्वयं को रोक न सका । वस्तुतः भारतीय शिक्षा अत्यंत महान तथा प्राचीनतम शिक्षा व्यवस्था है। अतएव **भारत विश्वगुरु** कहलाया।

इससे पूर्व कि हम भारतीय शिक्षा के विस्तार की चर्चा करें। हम शिक्षा के मानक व उद्देश्य की चर्चा करना परमावश्यक है। शिक्षा के उद्धेश्यों मे सर्वप्रथम चरित्र का निर्माण (***विद्या ददाति विनयम, विनयादयाति पात्रताम, पात्रत्वात धनमाप्नोति, धनात धर्म ततः सुखम*** अर्थात विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म तथा धर्म से सुख प्राप्त होता है) होना चाहिए तथा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। शारीरिक (भौतिक), मानसिक, आध्यात्मिक, चारित्रिक संवेगात्मक तथा आज के युग के अनुप आर्थिक विकास आदि सभी आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान अर्जित करना भी है (***नास्ति विद्या समं चक्षुनास्ति सत्यसमं तपः)***। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि वह मनुष्य की रक्षा कर सके। वैसे विद्या स्वयं बल है (**बुद्धिर्यस्य बलं तस्य)**। शिक्षा आजीविका प्राप्ति का अनुपम साधन है, परंतु मात्र आजीविका प्राप्ति ही शिक्षा का उद्धेश्य नही है, वरन शिक्षा ही मनुष्य को गुणी तथा सुसंस्कृत बनाती है । नही तो ***शास्त्रण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः*** जैसी स्थिति हो जाएगी। साथ ही शिष्य को सामाजिक, राष्ट्रीय तथा नागरिक कर्तव्यों का ज्ञान कराना भी शिक्षा का एक लक्ष्य है । अंततः "***या विद्या सा विमुक्तये***" शिक्षा का एक विशिस्ट लक्ष्य मोक्ष या ईश्वर प्राप्ति भी है, जिसे कही न कही विश्व के हर कौने मे मान्यता दी गई है।

(भाटिया, एम, प्राचीन भारत मे शिक्षा प्रलाणी, ,पेज 2–15)

भारतीय शिक्षा पद्धति प्राचीन काल मे अत्यंत समुन्नत व उत्कृष्ट थी। अतएव प्राचीन काल मे भारत को विश्व गुरु कहा जाता था । वस्तुतः यह शिक्षा मनुष्य को न केवल जीवन के यथार्थ का दर्शन कराती थी, वरन यह शिष्य को इस योग्य बनाती थी कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अंत मे मोक्ष को प्राप्त कर सके।

(https%//www.teachershelpinghand.com/2020/05/gurukul-modern -education-school changing-education-system-changing-in-education-system.html, Accesed on 8/08/2020)

प्राचीन शिक्षा वस्तुतः गुरुकुल शिक्षा पद्धति थी। विद्या र्थी अपने घर से दूर अपने गुरु या गुरुओं के आश्रम अर्थात गुरुकुल मे रहकर विद्या ध्ययन करते थे। आचार्य एवं गुरु कहा जाता था तथा छात्र को अंतेवासी, ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरु–शिष्य परंपरा हिंदू धर्म में ही नही, वरन जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म आदि मे भी है।

(https%//www.teachershelpinghand.com/2019/05/gurukul-and-school.htmlAccesedon/08/2020)

6 उप प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय कानपुर केण्ट, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

गुरु शिष्य से अध्यापन का कोई शुल्क प्राप्त नहीं करते थे। यह शिक्षा निःशुल्क थी। छात्र गुरु से सीखते थे और अपने दैनिक जीवन के कार्यों में गुरु की सहायता करते थे। ये शिक्षक स्वालंबन तथा व्यावहारिक जीवन की शिक्षा देते थे। शिष्य वेद अध्ययन करते थे। वेदमन्त्र कंठस्थ किए जाते थे। साथ ही साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण, तर्कशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, गणित, शस्त्र विद्या, चिकित्साशास्त्र, सामान्य ज्ञान, कलाकौशल आदि का भी अध्ययन किया जाता था।

शिष्य ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। ब्रह्मचारी अध्ययन–अध्यापन मे संलग्न रहते थे तथा वाद–विवाद, विचार विमर्श तथा शास्त्रार्थ मे सम्मिलित होकर अपनी योग्यता का परिचय देते थे। इस युग मे मौखिक उच्चारण, आगमन–निगमन पद्धति, आत्मदर्शन, कहानी कहना, याद करना, समालोचनात्मक विश्लेषण, व्यावहारिक ज्ञान तथा सम्मेलन आदि शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया जाता था। भिन्न–भिन्न अवस्था के विद्या र्थियों के अध्यापन हेतु समकेंद्रीय विधि का भी प्रयोग होता था, जिसमे सूत्र, वृत्ति, भाष्य, वार्तिक सम्मिलित थे। विषयों को स्मरण रखने के लिए सूत्र कारिका एवं सारणी विधि का प्रयोग किया जाता था। इस शिक्षा मे शारीरिक श्रम का विशेष स्थान था । इस युग की शिक्षा मे संस्कृत की सूत्र पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इस युग की शिक्षा पद्धति मे आधुनिक काल मे प्रचलित आगमन व निगमन पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इस कल मे अग्र पद्धति का प्रयोग होता है जिसमे बड़ी कक्षाओं के विद्या र्थी छोटी कक्षाओं के विद्या र्थियों का अ।ापन करते थे ।

(1.Gurukula Patrika, April–July, 1940-41, Ank 10, (12 June 1940), P.1,2.Gunjun Shakshi,H. 1971, "Social and Humanistic Life in India", Abhinav Publications, Delhi, PP.122-124.,3. प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक भारतीय समाज मे इसकी प्रासंगिकता,पृष्ठ 218–230)

इस शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण,आत्म अनुशासन तथा आध्यात्मिकता की ओर मोड़ना भी था तथा अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति ही था। नैतिक मूल्य, चारित्रिक उत्थान, संस्कृति एवं परंपरा के तत्व इस शिक्षा पद्धति के मुख्य गुण थे। सामान्यतया गुरु तथा शिष्य के रिश्ते को बहुत पवित्र माना जाता था । किसी की शिक्षा के अंत में, एक शिष्य गुरुकुल छोड़ने से पहले गुरु दक्षिणा प्रदान करता है। गुरुदक्षिणा एक पारंपरिक रीति थी जो गुरु की स्वीकृति, सम्मान और धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए दीजाती थी। आधुनिक काल मे स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी गुरुकुल परंपरा मे शिक्षण किया था जबकि बेल्जियम मे कुछ शिक्षा केन्द्र आज भी वेदिक गणित,कला, संगीत, नक्षत्र विज्ञान, संस्कृत तथा योग की शिक्षा प्रदान करने के लिए 8 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बालकों को गुरुकुल व्यवस्था मे शिक्षा प्रदान करते हैं।

(https%//www.teachershelpinghand.com/2020/05/gurukul-modern-education-school-changing-education-system-changing-in-education-system-changing-the-education-system.html)

स्त्रियॉ को भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। जो स्त्रियाँ केवल विवाह तक ही शिक्षा ग्रहण करती थी, उन्हें "सदयोदवास" कहा जाता था जबकि आजीवन शिक्षा ग्रहण करती थी उन्हें "ब्रम्हवदिनीज" कहा जाता था। उन्हें वेद तथा वेदांगो की शिक्षा दी जाती थी। इस युग की महान स्त्रियॉ मे अपाला, घोषा, इंद्राणी, लोपामुद्रा, गार्गी तथा मैत्रीयी आदि थी।

(https%//theculturetrip.com/asia/india/articles/what-did-the-ancient-indian-education-system-look-like)

प्राचीन विश्वविद्यालयों मे 6 सदी ईसा पूर्व मे तक्षशिला विश्वविद्यालय चिकित्सा का विश्वविख्यात शिक्षाकेंद् था। इसी प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय तर्क शास्त्र का, बल्लभी विश्वविद्यालय विधि, चिकित्सा, अर्थशास्त्र का तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय तांत्रिक बौद्ध धर्म का प्राख्यात शिक्षा केंद्र था। (नालंदा विश्वविद्यालय का महानतम पुस्तकालय इस समय मे था जिसे बख्तियार खिलजी ने जला दिया थ।) ये सभी विश्वविद्यालय वस्तुतः गुरुकुल ही थे । इसके अतिरिक्त नदिया, मिथिला, प्रयाग, अयोध्या तथा ओदंतपुरी भी शिक्षा के बड़े केंद्र थे । शिक्षा केंद्र तीन प्रकार के थे-गुरुकुल,परिषद तथा सम्मेलन।

दर्शन शास्त्र मे योग, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, पूर्व मीमांषा तथा उत्तर मीमांशा जैसे विकास विश्व मे प्रसिद्द हुये थे । गुप्त काल मे ब्राम्हणों को जो भूमि दान दी जाती थी उसे अग्रहार कहते थे। यह भूमि गुरुकुल थे तथा शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने। हर्षचरित मे गुरुकुल का उल्लेख मिलता है। अलबरुनी के विवरण से ज्ञात होता है कि पूर्व मध्य युग मे शिक्षा ले लिए कई गुरुकुलों की स्थापना की गई थी।

(भाटिया, एम, प्राचीन भारत मे शिक्षा प्रलाणी, ,पेज 2–15)

बोद्धों व जैनियो ने लगभग इसी परंपरा को आगे बढ़ाया उन्होने गुरुकुल को संघ कहा, मठ कहा। वेद की जगह पिटक का अध्ययन किया गया। गुरु को बौद्द धर्म मे भिक्षु कहा गया। वैदिक शिक्षा मे मोक्ष व चरित्र शीर्ष लक्ष्य था। बौद्ध शिक्षा मे चरित्र की शुद्दता ही मुख्य लक्ष्य था। विधियों का कुछ विकास अवश्य हुआ स्त्री शिक्षा का भी विकास हुआ परंतु मूल आत्मा वही थी।

भारत मे मुस्लिम राज्य की स्थापना के साथ ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार हुआ ,मकतब तथा मदरसा की स्थापना होने लगी। मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जबकि मदरसा उच्च शिक्षा के। इन दोनों मे प्रधानता से धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। परन्तु मुस्लिम कालीन शिक्षा मे पुस्तकालयों का विकास शिक्षा के लिए एक बड़ी पूंजी था। अध्यापन फारसी भाषा मे होता था जबकि अरबी अनिवार्य विषय था। केवल शहजादा राजव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण तथा कानून आदि का ज्ञान अर्जित करते थे। दंड शिक्षा का विशेष अंग था। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे। मुस्लिम शासको के संरक्षण के अभाव मे संस्कृत, नाटक, संगीत, व्याकरण तथा भारतीय साहित्य की शिक्षा चुपचाप चलती रही । सूफी दर्शन व उसकी शिक्षा जो दरगाहों मे दी जाती थी जहां पीर व मुरीद थे। जो शिष्य व गुरु के सम्बन्धों को दर्शाती है।

1781 मे कलकत्ते मे कलकत्ता मदरसा" की स्थापना, 1792 मे जोनाथन डंकन द्वारा **"संस्कृत विद्यालय"** की स्थापना, 1813 मे आज्ञापत्र के अनुसार शिक्षा मे धन व्यय करने का विधान अँग्रेजी शिक्षा के बढ़ते कदम की निशानी थी। 1830 मे लार्ड मैकाले के तर्को ने अँग्रेजी शिक्षा को भारतीय समाज मे प्रविष्ट कराया। 1854 के **वुड्स डिस्पेच** मे अँग्रेजी के साथ संस्कृत, अरबी–फारसी का अध्ययन आवश्यक बताया गया ।

1857 मे कलकता, बंबई तथा मद्रास मे विश्व विद्या लय बनाए गए। 1882 **मे हंटर आयोग** ने प्राथमिक शिक्षा के लिए उचित सुझाव दिये ।परंतु इसे नगर पालिका व ग्राम पालिका के भरोसे छोड़ा दिया गया अतःशिक्षा का स्टार गिरता गया । तब भारतीयों ने इसमे सुधार का प्रयास किया ।1870 मे बाल गंगाधर तिलक ने पूना मे फर्ग्युसन कालेज, 1886 मे आर्य समाज द्वारा लाहौर मे दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज तथा 1898 मे काशी मे श्रीमती एनी बेशेंट द्वारा सेंट्रल हिन्दू कालेज स्थापित किए गए ।1894 मे कोल्हापूर रियासत मे राजा छत्रपति शाहू जी महाराज ने दलितों के लिए विद्यालय खोले ।1904 मे लार्ड कर्जन ने विश्वविद्यालय कमीशन का प्रस्ताव पारित किया । इसके अब न केवल विश्वविद्यालय बल्कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा की उन्नति हुई ।1916 मे बनारस हिन्दू विश्व विद्या लय तथा मैसूर विश्व विद्यालय, 1918 मे ओसमानिया विश्व विद्या लय, 1920 मे अलीगढ़ मे मुस्लिम विश्व विद्यालय, 1921 मे ढाका व लखनऊ विश्व विद्यालय,1922 मे दिल्ली, 1923 मे नागपुर, 1927 मे आंध्र प्रदेश मे तथा 1926 मे अन्नामलाई विश्व विद्यालय स्थापित हुये ।

1938 मे बुनियादी शिक्षा के नाम से प्रसिद्ध हुई। सात से ग्यारह वर्ष के बालक बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य हो। शिक्षा मातृभाषा मे हो। हिन्दुस्तानी पढ़ाई जाय ।चरखा करघा कृषि लकड़ी का काम शिक्षा का केंद हो जिसकी बुनियाद पर साहित्य, भूगोल, इतिहास की पढ़ाई हो। इस का नाम ***"नई तालीम"*** रखा गया।

फिर **सार्जेंट शिक्षा** (1945)का निर्माण हुआ। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।डिग्री पाठ्यक्रम तीन वर्ष का हो ।6 से 14 वर्ष की अवस्था के बालक बालिकाओ की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई।

(1-Jha, D.M., "Higher Education in Ancient India". In Raza, M. (Ed.), Higher Education in India% Retrospect andProspect, New Delhi% AIU, 1991, Pp 1-5.
2.Altekar, A.S., Education in Ancient India, (5th edition), 1957, Varanasi% Nand Kishore and Bros.)

स्वतत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा क्षेत्र मे कई समस्याएँ थी। सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा, माध्यमिक तथा विश्व विद्या लय की शैक्षिक प्रलाणी मे सुधार, महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न स्तरों पर व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा का विकास करना, शिक्षा और शैक्षिक प्रशासन की संरचना का पुनर्गठन करना।

इसके लिए केंद्र सरकार के स्तर पर एक स्वतंत्र मंत्रालय बनाया गया । राज्य स्तर पर शिक्षा मुख्य :प से राज्य की जिम्मेदारी को सौपी गई । उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मानकों और समन्वय की समस्या जिम्मेदारी है विश्वविद्या लय अनुदान आयोग पर। अखिल भारतीय परिषदों के माध्यम से प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के संबंध में समन्वय किया जाना तय किया गया। केंद्र सरकार को दिल्ली, अलीगढ़ के केंद्रीय विश्वविद्या लयों का प्रबंधन करना था। सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एजुकेशन ने सामान्य शिक्षा नीति का निर्माण किया। बोर्ड में प्राथमिक, माध्यमिक, विश्वविद्या लय और सामाजिक शिक्षा के लिए अलग–अलग चार स्थायी समितियाँ गठित की गईं।

शिक्षा निदेशक प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को नियंत्रित करता है। निरीक्षणालय की सहायता से राज्यों में, जो स्कूलों की देखरेख के लिए सीधे जिम्मेदार है।

भारत में विश्वविद्या लय विशुद्ध :प से स्वायत्त निकाय हैं, जहां माध्यमिक संस्थान आंशिक :प से राज्य सरकार के अधीन हैं। आंशिक :प से स्थानीय निकायों के तहत और बड़े पैमाने पर निजी नियंत्रण में है, लेकिन शिक्षा के राज्य विभाग से मान्यता प्राप्त है तथा सहायता प्राप्त हैं। अधिकांश शिक्षण संस्थानों को अनुदान सहायता के आधार पर प्रबंधित किया जाता है।

भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मुख्यरुप से प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा शामिल है। प्रारंभिक शिक्षा में आठ साल की, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा में से प्रत्येक में दो साल की शिक्षा होती है। उच्च शिक्षा भारत उच्चतर माध्यमिक शिक्षा या 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद प्रारम्भ होती है। स्ट्रीम के अनुसार भारत में स्नातक पूरा करने में तीन से पांच साल लग सकते हैं। आमतौर पर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम दो से तीन साल की अवधि तक के होते हैं। पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा करने के बाद विभिन्न शैक्षणिक में शोध किया जा सकता है।

भारत में काफी अच्छे शिक्षण संस्थान हैं जो दुनिया के शैक्षिक संस्थानों से बेहतरीन प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं यथा भारतीय प्रौ|ोगिकी संस्थान (IIT), भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), भारतीय विज्ञान संस्थान, नेशनल लॉ स्कूल, तथा जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय ।

(1.Raza, M. (Ed.), Higher Education in India% Retrospect and Prospect, 1991, New Delhi% Association of IndianUniversities.
2.Nurullah, Syed and Naik, J.P., History of Education in India during the British Period, 1951, Bombay, Macmillan)

राधाकृष्ण आयोग(1948–49) ने विश्वविद्या लय शिक्षा मे सुधार हेतु कई सुझाव दिये यथा शिक्षा हेतु हर व्यक्ति की जन्मजात क्षमता को जाग्रत कर उसे प्रशिक्षित करना। अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ व्यक्तिगत, व्यावहारिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना । स्नातकोत्तर शिक्षा मे प्रशिक्षण व अनुसंधान पर विशेष बल देना। कृषि विश्वविद्या लय होना चाहिए तथा ग्रामीण क्षेत्रों मे उच्च शिक्षा का विकास करना चाइए। उच्च शिक्षा मे भी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा होना चाहिए। परीक्षा प्रणाली मे शैक्षिक परीक्षण और मूल्यांकन के वैज्ञानिक तरीकों का अपनाने की सिफारिश की गई ।

जबकि वर्ष 1952–53 मे ***मुदालियार आयोग*** ने माध्यमिक शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक सुझाव दिये। माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य आदर्श नागरिकों का उत्पादन करना है अतः शिक्षा के उद्देश्य हो धनार्जन की क्षमता विकसित करना, छात्रों के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व का विकास, मानवीय गुणों का विकास करना और नेतृत्व की गुणवत्ता विकसित करना

माध्यमिक शिक्षा 11 से 17 वर्ष की आयु के बच्चों और इन सात वर्षों के लिए होनी चाहिए तथा दो भागों में विभाजित होनी चाहिए–जूनियर हाई स्कूल तीन साल का तथा हाई स्कूल चार वर्ष का हो। *"कृषि"* ग्रामीण स्कूलों के लिए अनिवार्य विषय तथा लड़कियों के लिए गृह विज्ञान अनिवार्य किया जाना चाहिए। मातृभाषा या क्षेत्रीयभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में विविधता होनी चाहिए। व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी होना चाहिए। बाह्य परीक्षाओं की संख्या को कम करना चाहिए और वस्तुनिष्ठ परीक्षण शुः करने और प्रश्नों के प्रकार को बदलकर न्यूनतम करना चाहिए। प्रत्येक राज्य में शिक्षा निदेशक होना चाहिए।

1964–66 के शिक्षा आयोग ने विश्वविद्यालयों के लिए विशेष कार्य निर्धारित किए यथा नए ज्ञान की तलाश और साधना, सत्य की खोज में, नई जरुरतों और खोजों के प्रकाश में, पुराने ज्ञान और विश्वासों की व्याख्या करना। व्यक्तियों को उनके विकास में मदद करके, जीवन के सभी क्षेत्रों में सही प्रकार का नेतृत्व प्रदान करना। समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने, सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर को कम करने के लिए प्रयास करना। शिक्षकों व छात्रों में, और समाज में उनके माध्यम से आम तौर पर व्यवहार और मूल्यों को बढ़ावा देना।

20 अप्रैल,1986 की नई शिक्षा नीति की सिफारिशे थी कि शिक्षा का व्यावसायीकरण होना चाहिए। विशेष :प से शिक्षा के माध्यमिक चरण में पाठ्यक्रम नौकरी–उन्मुख होना चाहिए। विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बारे में लोगों को बताना चाहिए। निरक्षरता मिटाने के लिए सरकारी–गैर–सरकारी प्रयासों को प्रोत्साहित करना। प्रौढ़ शिक्षा, औपचारिक शिक्षा और खुले विद्या लयों की आवश्यकता पर बल देना।

1986 के बाद भी शिक्षा मे 1992 मे तथा 2005 मे NCF 2005 जैसे कई सुधार भी हुये वरन शिक्षा के मूल ढांचा अब तक बन चुका था।

(1) Government of India, Report of the University Education Commission (1948-49), 1949, New Delhi% Ministry ofEducation.
(2) Government of India, Report of the Education Commission (1964-68)% Education and National Development, 1966,New Delhi% Ministry of Education.
(3) Government of India, National Knowledge Commission% Compilation of Recommendations on Education,2006,07 &08, New Delhi% Ministry of Education.)

वर्तमान काल मे जिस शिक्षा का प्रचलन हो रहा है उसमे कई गुण हैं तथा कई दोष रहे हैं जिसमे निरंतर सुधार भी किया जा रहा है ।

- अब सार्वत्रिक शिक्षा अर्थात सभी के लिए शिक्षा न्यूनतम कक्षा 8 तक की शिक्षा सभी भारतीय नागरिकों को प्राप्त हो जाये इसके लिए RTE-2009 के अंतर्गत व्यवस्था की जा चुकी है ।
- आज शिक्षा विद्या र्थी केन्द्रित है ।
- शिक्षा के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ जैसे वाद–विवाद, भाषण , प्रश्नोत्तरी , नाटिका, काव्यपाठ आदि क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है।
- शिक्षा मे पर्यटन व पर्वतारोहण आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- गणित, विज्ञान तथा कंप्यूटर के ओलंपियाड आयोजित कर विद्या र्थियों की प्रतिभा के विकास के प्रयास को अभिप्रेरित किया जा रहा है।
- खेलकूद को दैनिक समयसारणी मे स्थान दिया गया है।
- प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रखा गया है।
- शिक्षा दूरस्थ डिसटेंट एजुकेशन भी ली जा सकती है।
- पाठ्यक्रम को लचीला बनाया जा रहा है।
- शिक्षा ऑनलाइन माध्यम से भी प्राप्त की जा सकती है ।
- शिक्षा मे मनोविज्ञान के अंतर्गत अभिप्रेरणा आदि संवेगो के द्वारा अध्यापन को प्रभावी बनया जा रहा है।
- शिक्षा मे तकनीकी प्रशिक्षण व व्यावसायिक प्रशिक्षण को विशेष स्थान दिया जा रहा है।
- शिक्षा मे चिकित्सा व अभियंत्रण के अतिरिक्त उड्डयन, खनन, बायोटेक्नोलाजी जैसे कई पाठ्यक्रम भी सम्मिलित किए गए हैं।
- परीक्षा की एक व्यवस्थित प्रलाणी है।

परंतु आज भी कई दूर्गुण वर्तमान शिक्षा पद्धति मे सम्मिलित हैं–

- अध्यापन प्रणाली लेक्चर अर्थात भाषण ही है।
- विद्यार्थी कई बार अक्रिय श्रोता बने रह जाते हैं।
- गुरु शिक्षक अनुपात अधिक होने के कारण व्यक्तिगत अंतर के तहत प्रत्येक शिक्षार्थी पर ध्यान नही दिया जा पा रहा है ।

- मूल्य या चरित्र का निर्माण आज शिक्षा का मूल उद्देश्य नही है। अक्सर शिक्षार्थी अपने गुरु का उपहास उढ़ाते। कई बार अपने गुरु को मारते पीटते भी दिख जाते है।
- आज की शिक्षा मे श्रम का महत्व शून्यवत कर दिया गया है।
- आज की शिक्षा मे व्यावहारिक शिक्षा को स्थान नही दिया गया है, शिक्षार्थी विद्या लय की चारदीवारी मे ज्ञानार्जन करते हैं ।अतः वे समाज से अपरिचित है तथा समाज मे सफल नही हो पाते हैं।
- आज की शिक्षा रोजगारपरक नही है। शिक्षा प्राप्ति के बाद भी शिक्षार्थी इतना कौशल विकास अर्जित नही कर पाते कि उन्हें रोजगार प्राप्त हो सके।
- वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य डिग्री प्राप्ति है या अच्छे अंक की प्राप्ति है न कि कौशल का विकास।
- पाठ्यक्रम आज भी कुछ स्ट्रीम का गुलाम हो, पर्याप्त लचीला नही हों पाया है।
- चूंकि विद्या लय गुरुकुल नही है तथा समाज मे ही है, अतःविद्या र्थी समाज की चमक दमक मे खो जाते है और विद्या र्जन का उद्देश्य भूल कर अपने मार्ग से भटक जाते हैं।
- शिक्षा समय सारणी से बंधी है। कई बार विद्या र्थी इस समय सीमा मे व्यस्त होने की वजह से विद्या र्जन नही कर पाते हैं।
- विद्यार्थी अपनी संस्कृति को छोडकर कुसंस्कृत हो रहे हैं।
- आज शिक्षक व शिष्य उपभोक्तावाद के शिकार हो चुके हैं। शिक्षा मे आत्मीयता का भाव समाप्त हो गया है। गुरु शिष्य संबंध अब नष्टप्रायः है।
- अब स्वयं की रक्षा अर्थात आत्मरक्षा या शस्त्र शिक्षा हमारी शिक्षा का अंग नही है।
- संस्कृत तो छोड़िए हिन्दी भी नही हम अपनी भाषा–संस्कृति सब खो चुके हैं क्योकि अधिकांश विद्या लयों मे प्रमुखतः सभी विषय अँग्रेजी मे ही पड़ाए जाते हैं।
- योग व सामान्य चिकित्सा भी अब शिक्षा के अंग नही है।
- रवीद्र नाथ टैगोर ने प्रकृति की गोद मे शिक्षा का समर्थन किया था क्या हम ऐसा कर पा रहे हैं? नही
- क्या हम बच्चो मे नए विचारों का सृजन करने का प्रशिक्षण देते है? क्या हम उसमे समस्या को स्वयं सुलझाने की क्षमता विकसित होने देते हैं? नही
- क्या हम उसकी स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति का दमन नही कर रहे है बल्कि हम तो उसे नोट्स रटने तथा तुरंत उत्तर याद करने के लिए एक आंधी दौड़ मे सम्मिलित करने मे तुले हैं।
- क्या हम उनकी स्वतंत्र जिज्ञासा का दमन नही कर रहे हैं? नही
- क्या हम उसमे एक वैज्ञानिक सोच उत्पन्न कर पा रहे हैं या इस को समाप्त करने मे नही तुले हैं?
- क्या हम विद्या र्थी मे एक मानवीय पक्ष उभारने का कभी प्रयास करते हैं? नही
- क्या हम उसमे अपने माता पिता, परिवार का उत्तरदायित्व संभालने की भावना तथा देश के लिए मर मिटने की भावना को विकसित कराते हैं? नही
- क्या शिक्षा मे भौतिकता हावी नही है? हे हाँ।
- क्या शिक्षा को हमने केवल सूचना प्राप्ति का पर्याय नही बनाया है ?
- क्या हम विद्या र्थियों मे वसुधेव कुटुंबकम की भावना विकसित कर समस्त विश्व के कल्याण की भावना विकसित कर पा रहे हैं?
- क्या हम विद्यार्थियों मे सह–अस्तित्व व धार्मिक साहिष्णूता की भावना विकसित का पा रहे हैं? नही ।
- क्या हम वैज्ञानिक शोध आदि के लिए सुविधा व दिशा दे पा रहे हैं?
- क्या विद्या र्थियों मे अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न कर पा रहे हैं?
- क्या हम शिक्षा के उद्देश्य पूरे कर पा रहे हैं?
- क्या परीक्षा के तय किए मानक शिक्षा की गुणवत्ता तथा शिक्षार्थी के द्वारा अर्जित क्षमता का मूल्यांकन कर पाने मे सक्षम है? नही?

इन सभी प्रश्नोत्तरों व दोषों पर एक दृष्टि डालने पर यह प्रतीत हो सकता है कि केवल आदर्श स्थापित करने के लिए ये दोष दर्शाये गए हैं। परन्तु ऐसा नही है। इनमे से बहुत से उद्देश्य एन सी एफ–2005 मे शिक्षा के उद्देश्य के :प मे चिन्हित किए गए हैं। संविधान मे धर्मनिरपेक्षता, प्रजातांत्रिक मूल्य, लोक कल्याण आदि मूल्यो को सन्निहित किया गया है। कुछ नई शिक्षा नीति 1986 तथा 1992, पोग्रॅाम आफ एक्शन (POA), लर्निंग विद आउट बर्डिन (Learning without Burden) मे भी उद्देश्यों के :प मे सम्मिलित किए गए थे ।

(1) (National Curriculum framework 2005, NCERT, January 2005

(2) Government of India, *National Knowledge Commission% compilation of Recommendations on Education* 2006,07 &08, New Delhi% Ministry of Education Government of India, *Report of the Yashpal Committee on Higher Education% The Report on 'Renovation and Rejuvenation of Higher Education',* 2008, New Delhi% Ministry of Education

(3) *UGC Annual Report 2005-06*, New Delhi% University Grants Commission and Selected Educational Statistics, New Delhi% Ministry of Human Resources Development.)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार हेतु सरकार निरन्तर नयी नीतियाँ, पाठयक्रम तथा एक्ट पारित कर व लागू कर शिक्षा मे सुधार के प्रयास कर रही है । शिक्षक अब वेतनभोगी है उसे न केवल अध्यापन की विधियों के साथ पाठ्यक्रम पूरा करने , शतप्रतिशत परिणाम देने का दबाव निरंतर रहता है। शिक्षार्थी केवल शिक्षार्थी है उसे जो पाठ्यक्रम मिलता है तथा जिस प्रकार की व्यवस्था शिक्षा प्रलाणी प्राप्त होती है वह उसका अंग बन जाता है।

वस्तुतः इसका कारण हम सब मे है, क्योंकि आज शिक्षा की सफलता एक IAS, IPS, चिकित्सक व अभियंता के सांख्यिकी आकड़े से निर्धारित करते हैं । अक्सर हम पूंछते है कि इस विद्या लय से कितने IAS, IPS, चिकित्सक व अभियंता बने है। परन्तु ये नही पूंछते कि कितने शिक्षार्थी अच्छे नागरिक बने, कितने अपने जीवन मे सफल हुये? विज्ञान स्ट्रीम सब लेना चाहते है । मानविकी स्ट्रीम कोई नही। क्यों? वे चिकित्सक या अभियंता बनाना चाहते हैं। विवाह के लिए कन्या ऐसे अधिकतम तथा ऊपरी आय वाले वर को चुनती है। वह अच्छे सुचरित्र व सुसंस्कारित पति नही ढूढ़ती है। विद्यार्थी वह पद चुनता है जिसमे अधिक आय हो। न कि वह पद जो उसके व्यक्तित्व व क्षमता के अनुसार हो। अभिभावक वह शिक्षा प्रदान करना चाहता है जो केरियर बनाए। वह इस विषय मे बवनदेमसवत या परामर्शदाता या केरियर परामर्शदाता का परामर्श या किसी शिक्षक की राय भी नही लेना चाहता है। समाज मे हम उसे सफल मानते है जो अधिक वैभवशाली जीवन जी रहा हो, अधिक भौतिक संपदा अर्जित कर चुका हो ।

फिर भी हम नए प्रयास कर रहे हैं। CBSE ने CCT & Critical Creative Thinking जैसे नई तकनीक, नए शिक्षण प्रविधि का प्रयोग की अनुषंशा की है जिसे केंद्रीय विद्या लय जैसे उत्कृष्ट संस्थानो ने अपनाया है। इसके अंतर्गत अध्यापन मे इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न की जाती है कि विद्या र्थी पेश की गई घटना, चित्र, कहानी को अपनी दृष्टि से देखता है तथा स्वयं के विचारो का सृजन करता है । पेश की गई समस्या का हल स्वयं खोजता है।

Brain storming तथा symposium की नयी तकनीक का प्रयोग कर विद्या र्थी मे विश्लेषण करने की क्षमता, सोचने की क्षमता, समस्या का हल निकालने की क्षमता, परिस्थिति का उचित आकलन करने के क्षमता का विकास करने के लिए किया जा रहा है। "सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी : एक भारत श्रेष्ठ भारत" के अंतर्गत ललित कलाए यथा संगीत व कला, प्रश्नोत्तरी, वाद विवाद प्रतियोगिता जैसे खुली प्रतियोगिताये तथा हिन्दी, संस्कृत व अङ्ग्रेजी भाषा के काव्य पाठ, वाद विवाद आदि की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं ताकि शिक्षार्थी मे ज्ञान अर्जित करने के साथ उसका विश्लेषण करने की क्षमता आए। उनमे अपने देश की संस्कृति का ज्ञान संगीत , नाटक तथा प्रतिदर्श के माध्यम से हो सके।

"आनुभाविक ज्ञान Experiential learning की नई विधा प्रारम्भ कर शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान को मान्यता देकर उसे "करके सीखने" की प्रेरणा दी जाती है। खेलो के लिए भी विद्या लय स्तर, क्षेत्रीय स्तर व राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगितायेँ आयोजित कर विद्या र्थी को अपनी क्षमता निखारने का मौका दिया जाता है। "स्वस्थ बच्चे स्वस्थ भारत" कार्यक्रम के अंतर्गत भारत के सभी विद्या र्थियों की खेलो मे क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है उनका सही शारीरिक विकास को संवर्धन दिया जा रहा है।

"भाषा संगम" कार्यक्रम के अंतर्गत सम्पूर्ण भारत की भाषाओं का उच्चारण करवाकर विद्या र्थियों मे पूर भारत का नागरिक बनाया जा रहा है। उनको भाषा ज्ञान का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हिन्दी राजभाषा के प्रति विद्यार्थियों मे आस्था मे वृद्धि तथा उनके हिन्दी ज्ञान का संवर्धन करने हेतु "हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा" (14 दिन) तथा संस्कृत भाषा के संवर्धन हेतु (संस्कृत सप्ताह मनाया जाता है।

जीवन मे स्वच्छता की महत्ता को समझाने हेतु मानया जाने वाला "स्वच्छ्ता पखवाड़ा" विद्या र्थियों को श्रम की महत्ता भी समझाते है ।

राष्ट्रीय सामाजिक सेवा (NSS), स्काउट एव गाइड केंप हमारे विद्या र्थीयो को समाज सेवा, राष्ट्र–भक्ति, वसुधेव कुटुंबकम की भावना विकसित कराते है। यही विद्या र्थी आपदा के वक्त आपदा पीड़ितों की रक्षा करते हैं।

NCC हमारे विद्यार्थियों मे सेना मे चुने जाने के लिए एक द्वार खोलता है।

राष्ट्रीय एकता पखवाड़ा व यूवा संसद, विद्या र्थीयों मे सविधान के प्रति न केवल आस्था मे वृद्धि करता है, वरन उनमे राष्ट्रीय चरित्र का विकास करता है।

स्पष्ट है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार, विद्या लय तथा शिक्षक निरंतर प्रयासरत हैं। आवश्यकता है समाज को अपने शिक्षा के प्रति अपने उद्देश्य पुनः निर्धारित करने की। आवश्यकता है पुनः समाज जाने कि विद्या लय विद्या र्थी व शिक्षक तथा संसद मे बैठे सांसद आदि समाज के अंग हैं। शिक्षा वही उत्पादित करेगी जो समाज की मान्यता होगी शिक्षा उससे अछूती नही रहेगी। उदाहरणतया कोविड–19 की परिस्थितियों मे समाज मे महामारी के वचाव के उपाय तौर पर ऑन लाइन शिक्षा का अपनाया जाना।

निष्कर्ष यह है कि सरकार, विद्या लय, CBSE, UGC जैसे नियामक संस्थान निरंतर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रयासरत हैं। कोई भी शिक्षा व्यवस्था आदर्श शिक्षा व्यवस्था नही होती है हमे निरंतर प्रयास करना होगा कि हम उन दोषो को न्यून करने करने का तथा विद्यार्थियों का अधिकतम विकास करने का। यही प्रयास हमे वैश्विक शक्ति बनाने मे सफलीभूत हुये हैं। आगे भी हम विश्व की सभी चुनौतियों का समाना करते हुए भारतीय शिक्षा पद्धति को विश्व की महानतम शिक्षा व्यवस्था के :प मे स्थापित कर देंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. (भाटिया, एम, प्राचीन भारत मे शिक्षा प्रलाणी, पेज 2–15)
2. हमारी शिक्षा पद्धति कैसी हो? अखंड ज्योति, फरवरी 1957,पृष्ठ 12–34
3. प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक भारतीय समाज मे इसकी प्रासंगिकता,पृष्ठ 218–230
4. संग्रहित प्रति https%//en-wikipedia-org/wiki/Sayajirao_Gaekwad_III, अभिगमन तिथि 8 अगस्त 2020)
5. गुरुकुल, अप्रेल – जुलाई, 1940–41, अंक 10, (12 श्रनदम 1940), P-1
6. "अब जेएनयू और बीएचयू समेत 60 संस्थान खुद लागू कर सकेगे नियम, यूजीसी ने दी स्वायत्ता"
7. (https%//www.patrika.com/miscellenous-india/jnu-bhu-amu-with-60-institutions-graded-autonomy-nod-by-ugc-2524981अभिगमनतिथि 8 अगस्त 2020
   (https%//www.teachershelpinghand.com/ 2020/05/gurukul-modern -education-school changing-education-system-changing-in-education-system.html, Accesed on 8/08/2020)
8. https%//www.teachershelpinghand.com/2019/05/gurukul-and-school.html,Accesedon8/08/2020)
9. Gunjun Shakshi,H. 1971, "Social and Humanistic Life in India", Abhinav Publications, Delhi, PP.122-124.
10. https%//www.teachershelpinghand.com/2020/05/gurukul-modern-education-school-changing-education-system-changing-in-education-system-changing-the-education-system.html)अभिगमनतिथि 8 अगस्त 2020)

11. Ujjwal,Madalsa, 2008, "Swami Dayanand Saraswati Life and Ideas", Book Treasure Publications, Jodhpur, PP.96-97)अभिगमनतिथि 8 अगस्त 2020)

12. (https%//theculturetrip.com/asia/india/articles/what-did-the-ancient-indian-education-system-look-like)अभिगमनतिथि 8 अगस्त 2020)

13. Jha, D.M., "Higher Education in Ancient India". In Raza, M. (Ed.), *Higher Education in India% Retrospect andProspect*, New Delhi% AIU, 1991, Pp 1-5.

14. .Altekar, A.S., *Education in Ancient India,* (5th edition), 1957, Varanasi% Nand Kishore and Bros

15. Raza, M. (Ed.), *Higher Education in India% Retrospect and Prospect,* 1991, New Delhi% Association of IndianUniversities.

16. Nurullah, Syed and Naik, J.P., *History of Education in India during the British Period,* 1951, Bombay, Macmillan)

17. Government of India, Report of the University Education Commission (1948-49), 1949, New Delhi% Ministry ofEducation.

18. Government of India, Report of the Education Commission (1964-68)% Education and National Development, 1966,New Delhi% Ministry of Education.

19. Government of India, National Knowledge Commission% Compilation of Recommendations on Education,2006,07 & 08, New Delhi% Ministry of Education.

20. National Curriculum framework 2005, NCERT, January 2005

21. Government of India, National Knowledge Commission% Compilation of Recommendations on Education 2006,07 &08, New Delhi% Ministry of Education

22. Government of India, Report of the Yashpal Committee on Higher Education% The Report on 'Renovation and Rejuvenation of Higher Education', 2008, New Delhi% Ministry of Education

23. UGC Annual Report 2005-06, New Delhi% University Grants Commission and Selected Educational Statistics, New Delhi% Ministry of Human Resources Development.

24. Mehta, Arun C. (1995)% Education for All in India- Myth and Reality. Kanishka, New Delhi.

25. Mehta, Arun C. (1996)% 'Reliability of Educational Data in the Context of NCERT Survey'. Journal of Educational Planning and Administration, NIEPA, July 1996, Volume X, No. 1, New Delhi.)

26. Dr. Maheshwari, V.K., Education During Medieval Period In India, (www.vkmaheshwari.com/WP/?p=512) Posted On May 6, 2012Accessed On 01/08/2020

27. https%//www.gnu.org/eduction/edu-system-india-en.html,accessed on 01/082020.

❖◆❖